विश्व के शैलचित्र उन मानवीय प्रयासों की रोचक गाथा है, जिनके द्वारा मानव ने अपने सौन्दर्य बोध को वास्तविक रूप देने का प्रयास किया। स्मरणातीत काल से प्रारम्भिक मनुष्य ने अपने आस–पास के संसार को संकलित करना प्रारम्भ कर दिया, और मानव सभ्यता के संभरण के लिए अपने क्रिया–कलापों को ऐसी दिशा देना भी प्रारम्भ कर दिया जिससे उसकी आने वाली संतती और भी समृद्धशाली हो। जिन प्राकृतिक कन्दराओं और आश्रयणियों में उन्होंने निवास किया उन्हें चित्रों और नक्काशियों से सजाया–संवारा।

शैलोत्कीर्ण पशु आकृति, पिलबारा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया

बैल, फिज़ान लीबिया

उनके रूपां–कनों के विषय–वस्तु वही बने जिनका उन्होंने अपने चारों ओर की प्रकृति और जीवन में अवलोकन किया। अंटार्कटिका को छोड़कर शैल चित्र विश्व के सभी कोनों में पाए गए हैं। पुरानी दुनिया यथा अफ्रीका, एशिया, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका से लेकर सभी महादेशों में इसके साक्ष्य उपलब्ध हैं। एशिया विश्व का सबसे बड़ा महादेश है तथा इसकी कलात्मक धरोहरें विविधताओं से परिपूर्ण हैं। इसके विशाल भू–मण्डल को पाँच भागों में विभाजित किया जा सकता है, मध्य, पश्चिम, पूर्व, दक्षिण तथा दक्षिण पूर्व एशिया। मध्य एशिया के दो सबसे प्रमुख कला अनुक्षेत्र कजाकिस्तान का तमगाली और अल्ताई पर्वत श्रृंखला है।

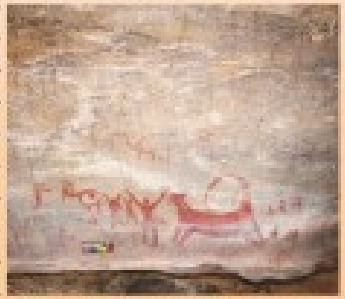

मुख्य शैलोत्कीर्णनों का केन्द्रीकरण सऊदी अरब के शुष्क क्षेत्र, पश्चिम एशिया में इजराईल के नागेव मरुभूमि में उपलब्ध है। दक्षिण पूर्व एशिया के भारत और पाकिस्तान जैसे देश शैलचित्र धरोहरों की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध हैं। मध्यप्रदेश (भारत) के भीमबेटका को यूनेस्को के द्वारा विश्व कला धरोहर के रूप में अभिलिखित किया गया है। संख्या और गुणवत्ता की दृष्टि से भारत के शैलचित्र किसी भी अन्य देश की कला से प्रतिस्पर्द्धा कर सकते हैं। पूर्व एशिया में चीन और जापान ऐसे दो महत्वपूर्ण राष्ट्र हैं जहाँ शैल

मानवाकृतियाँ गोबिस्तान, अज़रबेजान

पशु शैलचित्र लॉस्काक्स गुफा, दोर्दोग्ने, फ्रांस

चित्रों का समृद्ध केन्द्रीकरण देखा जा सकता है। पूर्व तथा दक्षिणपूर्व एशिया में इंडोनेशिया, म्यांमार इत्यादि देशों से शैल चित्र स्थलों का प्रतिवेदन उपलब्ध है। शैल चित्रों के निष्पादन के लिए अनेक तकनीकों का उपयोग देखा जा सकता है जैसे, सतही उत्कीर्णन, खुरचन (अरग) तकनीक, टोचन या टंकन प्रविधि, पॉलिश इत्यादि का प्रयोग पेट्रोग्लिफ (शैलोत्कीर्णन) में हुआ है, जबकि चित्र लिपियों के लिए चित्रांकन और खाँचा कटाव (स्टेन्सिल अभिकल्प) इन दो मुख्य तकनीकों का उपयोग हुआ है।

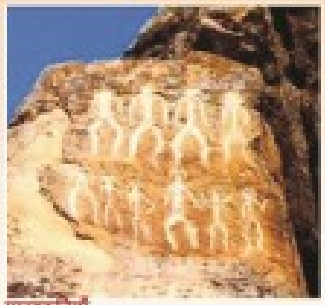

शैलचित्रों की विषय वस्तु में भी बहुत विविधताएं देखी जा सकती है ऑस्ट्रेलिया की पनारमिटी परम्परा की सरल ज्यामितीय रूपाकन से लेकर कैलिफोर्निया के चूमस समुदाय के द्वारा उकेरी गई जटिल ज्यामितीय रूपाकन की व्यापक श्रृंखला उपलब्ध है। पशु शायद प्रारम्भिक मानव के लिए सबसे रोचक विषय कहे जा सकते हैं जो उनके जीवन संभरण से सीधे जुड़े थे। इसलिए जंगली जानवरों का और आखेट दृश्यों का स्वाभाविक प्रस्तुतीकरण सबसे सुलभ विषय बने हैं।

मानव एवं पशु शैलचित्र बूंदी, राजस्थान

पशु आकृतियाँ सुंदरगढ़, उड़ीसा

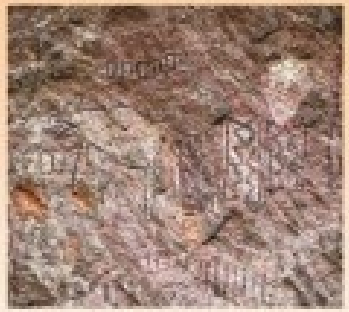

शायद पशुबल से सम्पन्न होना प्रारम्भिक मानव की सर्वाधिक अपेक्षित जिज्ञासा रही होगी, तभी तो पाषाणकालीन यूरोप से लेकर दक्षिण अफ्रीका के बुशमैन समुदाय के चित्रों तक अर्द्धनर–अर्द्धपशु की आकृतियाँ बहुतायत से पाई जाती है। पशुपालन और कृषि के प्रारम्भ के पश्चयात मनुष्य के जीवन शैली में जो जटिलता आई तथा उसके भौतिक संस्कृति और सामाजिक जीवन में जो परिवर्तन हुआ उसका विविधतापूर्ण निरूपण शैल चित्रों में अंकित पाया जाता है। कैलिफोर्निया के कोसो श्रृंखला, टेक्सास के शामानीधर्म के निरूपण, ऑस्ट्रेलिया के पूर्वज पुरुषों के अंकन तथा दक्षिण अफ्रीका के बुशमैन समुदाय के द्वारा बनाए गए मानवाकृतीय शैलचित्रों से प्रारम्भिक मानव की धार्मिक आस्था, मिथक और परम्पराओं का पता चलता है। शैलचित्रों में रूपांकित प्यालिकाओं याचषिकाओं तथा हाथ के छाप विश्व के सभी कोनों में सामान्य रूप से उपलब्ध है, जो प्रारम्भिक मानव के मस्तिष्क की सार्विकता (सार्वत्रिकरण) का द्योतक है और शैल चित्रों की कलात्मक धरोहर की महान विविधता का भी।

ज्यामितिक आकृतियाँ जनस्थान पहाड़ियाँ, बिहार

भारत में पूर्व ऐतिहासिक शैलचित्र, सर्व प्रथम स्पेन के आल्टमिरा की खोज के बारह वर्ष पहले खोजे गए। आर्किबाल्ड कार्लाइल ने उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के सोहागीघाट में इन्हें 1867 में खोजा था। पश्चिमी क्षेत्र में मुख्यतः राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र एवं गोवा से शैलचित्रों की प्राप्ति होती है। राजस्थान के मध्यवर्ती भाग में दक्षिण से उत्तर में प्रसारित अरावली पर्वत श्रंखला के दोनों ओर स्थित नदियों के कगारों तथा ग्रेनाइट चट्टानों की लघु पहाड़ियों के शैलाश्रयों में अनेक शैलचित्र प्रकाश में आये हैं। भौगोलिक, क्षेत्रगत एवं शैलचित्रों की शैलीगत विशेषताओं के आधार पर राजस्थान के सम्पूर्ण भू–भाग को चार भागों में विभाजित किया गया है –1) उत्तर–पूर्वी राजस्थान (जयपुर, अलवर, भरतपुर व सवाई माधोपुर), 2)दक्षिण–पूर्वी राजस्थान (चम्बल नदी क्षेत्र में कोटा, बूंदी, झालवाड़ा तथा बारां, बनास नदी क्षेत्र का मेवाड़ अंचल के उदयपुर, चित्तौड़गढ़ एवं भीलवाड़ा), 3) दक्षिण–पश्चिमी राजस्थान (अजमेर, पाली, जोधपुर एवं सिरोही) तथा उत्तर–पश्चिम राजस्थान (शेखावाटी अंचल के सीकर, झुंझुनू एवं चूरू)। शैलकला की दृष्टि से राजस्थान का दक्षिण–पूर्वी क्षेत्र (चम्बल नदी घाटी क्षेत्र में कोटा, बूंदी, झालवाड़ा व बारां) अधिक समृद्ध है। राजस्थान में सर्वप्रथम शैलचित्रों की खोज वर्ष 1953 में डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर द्वारा दारा (कोटा) के क्षेत्र में किया गया था, तदोपरांत अभी तक हुए शोध कार्यों के परिणामस्वरूप राजस्थान से लगभग 3000 शैलाश्रयों की प्राप्ति हुई है जिनमें से लगभग 500 में शैलचित्रों का अंकन है जो चित्रांकन एवं उत्कीर्णन दोनों पद्धति पर आधारित हैं। प्रस्तुत विषयों में पशु–पक्षी समूह, एकांकी एवं सामूहिक मानवाकृ–

शिकार का दृश्य, बूंदी, राजस्थान

पशु एवं मानव आकृतियाँ सवाई माधोपुर, राजस्थान

कपमार्क्स का आँकन
बाजणा भाटा, राजस्थान

–तियाँ, आखेट दृश्य, आवासीय प्रारूप, सामुदायिक क्रियाकलाप, युद्ध दृश्य व ज्यामितीय आकृतियाँ आदि का अंकन है एवं उत्कीर्णन दोनों पद्धति पर आधारित हैं, साथ ही अजमेर के नसीराबाद में स्थित मोरझड़ी तथा सीकर क्षेत्र में गुहला ग्राम में बाजणा भाटा से 'कपमार्क्स' भी प्राप्त हुए है। शैलिगत विशेषताओं के आधार पर राजस्थान के शैलचित्रों की कालावधि उच्चपुरापाषाण काल (30,000 ईसा पूर्व) से ऐतिहासिक कल तक है। राजस्थान के वन्य क्षेत्र में प्रकृति के साथ सह–जीवन पद्धति से निवास करने वाले आदिवासी जनसमूह शैलाश्रयों एवं शैलचित्र कला से वर्तमान में भी सम्बद्ध हैं जिसके जीवंत कला का प्रमाण उनके घरों के दीवारों पर अंकित भित्तिचित्रों से स्पष्ट होता है।

प्रस्तुत की जा रही विश्व के शैलचित्र, कला प्रदर्शनी में प्रदर्शित चित्र 6 दिसम्बर 2012 से 25 जनवरी, 2013 के बीच इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शैल चित्र सम्मेलन के दौरान लगी शैल चित्र प्रदर्शनी से चुने गए प्रतिनिधि शैल चित्र हैं। समाज के प्रतिनिधिक समूहों (क्रॉस सेक्शन) से जिनमें विद्व तृजन, मिडिया के लोग, सरकारी सेवक तथा सामान्य लोग सभी शामिल थे, उनसे जो सकारात्मक प्रतिपुष्टि प्राप्त हुई उसी के आधार पर यह निर्णय लिया गया कि इस प्रदर्शनी को देश के दूसरे हिस्सों में भी चलंत तथा परिसंचारी प्रदर्शनी के रूप में ले जाया जाए, जिससे स्कूली बच्चों, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के छात्रों तथा सामान्य लोगों को इसकी जानकारी दी जा सके। इसके पूर्व, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (5 से 28 मार्च, 2013), ओडिशा राजकीय संग्रहालय, भुवनेश्वर (18 मई से 23 जून, 2013), श्रीमंत शंकरदेव कला क्षेत्र, गुवाहाटी (12 अप्रैल से 3 मई, 2013), इतिहास विभाग, पाँडिचेरी विश्वविद्यालय, पुडुचेरी (25 जुलाई से 25 अगस्त, 2013), नेशनल गैलरी ऑफ मॉर्डन आर्ट्स, बेंगलुरू आर्ट्स, बेंगलुरू (3 दिसम्बर 2013 से 3 जनवरी, 2014), सेंटर फॉर हेरिटेज स्टडीज थ्रीपुनिथुरा, केरल (28 नवम्बर 2014 से 28 दिसम्बर, 2014), संगीथ महल पैलेस कॉम्प. लेक्स, थंजावुर, तमिलनाडु (6 मई से 21 जून, 2015), ए0एस0आई0, पुरातत्व भवन, सेमिनरी हिल्स, नागपुर (19 नवम्बर से 26 अप्रैल, 2015), हिमाचल स्टेट म्युजियम, शिमला (15 जुन से 24 जुलाई, 2016), आई0जी0आर0एम0एस0, भोपाल (17 फरवरी से 15 मार्च, 2017), महादेवी कन्या पाठशाला (एम0के0पी0 कॉलेज, देहरादुन (22 नवम्बर से 12 दिसम्बर, 2017), विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग (13 मार्च से 12 अप्रैल, 2018), बिहार म्यूजियम, पटना बिहार (18 अगस्त से 14 सितम्बर, 2018) तथा महाराजा सयाजीराव बड़ौदा विश्वविद्यालय (24 अक्टूबर से 17 नवम्बर, 2018) में यह प्रदर्शनी लगाई जा चुकी है। चीन के इनचुआन नगर में इंडियन रॉक आर्ट पर एक प्रदर्शनी लगाई गई। इसका उद्घाटन 26 से 28 अगस्त, 2014 के बीच आयोजित विश्व शैलचित्र सम्मेलन के अवसर पर किया गया था। यह प्रदर्शनी 26 अगस्त, 2014 से 30 सितम्बर, 2015 के बीच प्रायः एक वर्ष तक सामान्य लोगों के लिए खुली रही। 24 फरवरी से 27 मार्च, 2016 के बीच आई0जी0एन0सी0ए0, नई दिल्ली के द्वारा 'इंडिया–चाइना रॉक आर्ट' पर एक प्रदर्शनी लगाई गई थी।

मित्ती अलंकरण
बूंदी, राजस्थान

जनजातीय नृत्य दृश्य
ग्राम खजुरी, रायगढ़, उड़ीसा

वर्तमान में जो प्रदर्शनी आपके समक्ष है उसके लिए संसार के पांच महादेश – अफ्रीका, एशिया, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका के प्रतिनिधिक वस्तुओं का चयन किया गया है। महादेशीय क्रम में उनकी महत्वपूर्ण परम्पराओं का एक प्रतिनिधिक संकलन उपलब्ध कराया जा रहा है। यह दर्शकों के लिए एक ऐसा माध्यम बन सकता है जहाँ से वह मानव सभ्यता की जीवन्त कलाओं के परिवर्तित हो रहे आयामों और पहलुओं में प्रवेश पा सकता है। यह प्रदर्शनी एक सीमा तक दर्शकों के लिए एक प्रयोगात्मक सम्पर्क का सृजन करती है। ऐसा माना जाता है कि मानव की अपने आस–पास के संसार के प्रति चेतना उसको आद्य पुरातन दृश्य और श्रव्य ऐकिक अनुभवों के माध्यम से मिली है। इन्हीं दो इन्द्रियों ने कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए उद्दीपन का काम किया, जो दृश्य और कर्णजनित पूर्वाभासों से उसके पूर्व ऐतिहासिक अतीत से वर्तमान की संस्कृतियों तक सम्प्रेषित होती चली गईं। वर्तमान प्रदर्शनी अद्यतन जीवन्त कला परम्परा की दृष्टि से तीन समुदायों – ओडिशा के लंजिया सौरा, गुजराज के रथवा भील, तथा महाराष्ट्र के वार्ली को भी प्रदर्शित कर रही हैं, जिससे भारतीय संदर्भ में कलात्मक परम्परा की निरंतरता की एक झलक मिल सकें।

प्रवेश निःशुल्क

प्रवेश निःशुल्क

स्थान
माणिक्य लाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय
सलेटिया परिसर, टाउनहॉल लिंक रोड़, उदयपुर

निवेदक

डॉ. बी. एल. मल्ला
परियोजना निदेशक
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र , नई दिल्ली

डॉ. कुलशेखर व्यास
डॉ. के. पी. सिंह
स्थानीय समन्वयक

प्रो. जीवन खरकवाल
निदेशक
साहित्य संस्थान

विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी

(19 जनवरी – 18 फरवरी, 2019)

आयोजित द्वारा
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली
(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
एवं
साहित्य संस्थान
(इंस्टिट्यूट ऑफ राजस्थान स्टडीज)
जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), उदयपुर, राजस्थान